प्रातः क्लास 11-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबायाद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। रूहानी बाप का नाम क्या है, जरूर कहेंगे शिव। सभी का रूहानी बाप है। भगवान भी उनको कहा जाताहै। तुम बच्चों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ ही समझते हैं। यह जो आकाश वाणीकहते हैं, अभी आकाश वाणीकिसकीनिकलती है? शिवबाबा के इस मुख को आकाश का तत्व कहा जाता है। आकाश के तत्व से वाणी तो सभी मनुष्यों के निकलते हैं। जो भी सभी आत्मायें हैं, अपने बाप को भूल गये हैं। अनेक प्रकार से गायन करते रहते हैं, जानते कुछ भी नहीं। गायन भी यहां करते हैं। सभी कामनायें वहां पूरी होजाती है। यहां तो कामनायें बहुत रहती है ना। बरसात नहीं पड़ती है तो यज्ञ रचते हैं। समझते तो कुछ भी नहीं हैं। ऐसे नहीं कि सदैव यज्ञ करने से ही बरसात पड़ती है। नहीं। कहां फैमन पड़ती है, भल यज्ञ करते हैं परन्तु यज्ञ करने से कुछ होता नहीं है। यह तो ड्रामा है। आफतें जो आनी है वह तो आती ही रहती हैं। कितने ढेर मनुष्य मरते हैं। कितनी रीढें वकारयां आदि मर जाते हैं। मनुष्य कितने दुःखी होते हैं। क्या बरसात को बन्द करने लिए भी यज्ञ है? जब एकदम मुसलाधार बरसात होंगी तो फिर यज्ञ करेंगे। इन सभी बातों को अभी तुम समझते हो। और क्या जाने। पहाका है ना रीढ क्या जाने राज़ को .... साण्डे है ना। अपना अहंकार कितना है। यह अक्षर मनुष्यों के लिए ही निकलते हैं। सान्डे मिसल अंहकार है। बन्दर मिसल गुर गुर कितना करते हैं। यह बाप खुद बैठ समझाते हैं। महिमा भी बहुत करते हैं और फिर गाली भी बहुत देते हैं। तुम बन्दर खाते हो। बाबा की ग्लानी कब से शुरू हुई, जब से रावण राज्य शुरू हुआ, विकार में गये। गीता ही है मुख्य शास्त्र। उन में पढ़ा ईश्वर सर्वव्यापी है तब से गिरने लगे हैं। गायन है ना निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सो। अभी सब से जास्ती ग्लानी हमारी किसने की है? तुम बच्चों ने। अभी फिर मित्र भी तुम बने हो। यूं ग्लानी तो सारी दुनिया ही करती है परन्तु उन में भी नम्बरवन तुम। फिर तुम ही मित्र अर्थात बच्चे बने हो। जो ग्लानी करते हैं वही मित्र हैं। सबसे नज़दीक वाले मित्र हैं बच्चे। बाप नहीं। मित्र सब से जास्ती हैं बच्चे। बेहद का बाप कहते हैं हमारी निन्दा तुम बच्चों ने ही की है। कौन से बच्चे? तुम जो हमारे बहुत नज़दीक थे। जिनको राज भाग दिया। गीता भी तुम पढ़े। सर्वव्यापी कह ग्लानी भी तुम ने की। तुम ही मित्र ठहरे ना। तुम अपकार करते हो। बाप फिर तुम पर उपकार करते हैं। मित्र बच्चे ही हैं। उसमें भी नम्बरवार नजदीक वाले सब से अपकारी बने। देखो ड्रामा कैसा बना हुआ है। यह है विचार सागर मथन करने की बातें। बिचार सागर मथन का भी कितना अर्थ निकालते हैं। कोई समझ न सके। बाप कहते हैं तुम ही हमको गाली देते, निन्दा करते आये हो। तुम पर हम कितना उपकार कर रहे हैं। गायन भी है यदा यदा हि ... भारत की ही बात है। ग्लानी भी वह करते हैं। ग्लानी करते2 बहुत पतित बने हैं। वही फिर पावन बनते हैं। खेल देखो कैसा है। शिव जयन्ती अथवा शिव रात्रि मनाते हैं, वास्तव में अवतार है एक। परन्तु मुर्ख ऐसे हैं जो इतनी ग्लानी करने से भी पेट नहीं भरता तो युगे2 अवतार कह दीया है फिर ठिक्कर भित्तर में ठोक देते। बाप डोरापा देते हैं। गीतापाठी पहला श्लोक पढ़ते भी हैं यदा यदा हि ... परन्तु यह किसने कहा? पता नदारथ। सबसे जास्ती ग्लानी तुम बच्चों ने की। सबसे अच्छे मित्र(बच्चे) तुम ही हो। प्यारे ते प्यारे बाप के बच्चे ही होते हैं। यह भी कहता है मेरे प्यारे बच्चे। कोई से भी बात करेंगे तो बच्चे बच्चे ही कहेंगे। तुम्हारे मुख से ऐसे कब बच्चे2 नहीं निकलेगा। बाप को तो वह दृष्टि पक्की हो गई है। सभी आत्मायें हमारे बच्चे हैं। तुम से एक भी नहीं होगा जिसके मुख से बच्चे अक्षर निकले। यह तो जानते हैं कोई किस मर्तबे वाला है कोई क्या है। है तो सभी आत्मायें ना। यह भी ड्रामा बना हुआ है। हरख शोक नहीं होता। सभी हमारे बच्चे हैं। कोई ने मेहतर का शरीर धारण किया है। बच्चे2 कहने की टेव पड़ गई है। बाबा की नज़र में सभी आत्मायें ही आत्मायें हैं। फिर उनमें भी बहुत गरीब हैं। गरीब ही बहुत अच्छे लगते हैं। क्योंकि उन्हों ने मेरी बहुत ग्लानी की है ड्रामा अनुसार। अभी फिर मेरे पास आये हैं। तुम सब से जास्ती पढ़े तो ग्लानी भी तुम ने की। सभी की ग्लानी करते आये सिर्फ यह ल०ना० हैजिनको

कब ग्लानी नहीं की है। कृष्ण की बहुत ग्लानी की है। वन्डर है ना। बड़ा बना तो उनकी ग्लानी है नहीं। कृष्ण की कितनी ग्लानी की है। यह ज्ञान कितना अटपटा है। ऐसी2 गुह्य बातें शेढ बकरियां(भेंड़)थोड़े ही समझ सकते हैं। इसमें तो चाहिए सोना कार्क्तन। वह तो याद की यात्रा से ही सतोप्रधान बन सकते हैं। याद की यात्रा है नहीं। यहां बैठे भी पुरुषार्थ याद का थोड़े ही करते हैं। यह थोड़े ही समझते हैं हम बिन्दी बहुत छोटे हैं। और याद भी छोटी सी आत्मा को करते हैं। यह तो बुधि में आता भी नहीं। छोटी सी आत्मा वह हमारा बाप भी है टीचर भी है। यह तो बुधि में आना ही असम्भव हो जाता। बाबा बाबा तो कहते हैं। दुःख में सिमरण भी करते हैं। भगवानुवाच है दुःख में सभी याद करते सुख में करे न कोय। दरकार ही नहीं रहती याद करने को। यहां तो कितने दुःख आफतें आद आती हैं। याद करते हैं हे भगवान रहम करो। कृपा करो। अभी भी बच्चे बनते हैं तो लिखते हैं कृपा करो। शक्ति दो। रहम करो। बाबा लिखते हैं शक्ति आपे हे योग बल से लो। अपन पर कृपा, रहम आपे ही करो। अपन पर आपें ही राजतिलक दो। युक्ति बताता हूं कैसे दे सकते हो। टीचर पढ़ने की युक्ति बताते हैं। स्टुडन्ट का काम है पढ़ना। डायरेक्शन पर चलना। टीचर कोई गुरु थोड़े ही है। जो कृपा वा आशीर्बाद करे। बाप कहते हैं जो जितना रेस करे। जो अच्छे बच्चे होंगे वह दौड़ेंगे। बुधु लटक पड़ेंगे। हरेक स्वतंत्र है। जितना दौड़ी पहननी हो पहनो। याद की यात्रा की दौड़ है। एक एक आत्मा स्वतंत्र है। भाई-बहन का भी नाता छोड़ा दिया। भाई2 समझो। परन्तु फिर भी क्रिमनल आई आई छूटती नहीं रहे। वह अपना काम करती रहती है इस समय मनुष्यों के सभी अंग क्रिमनल हैं। किसको लात मारी, ढूंसा मारा तो क्रिमनल अंग हुआ ना। अंग अंग क्रिमनल है। वहां कोई भी अंग क्रिमनल नहीं होता। यहां तो अंग अंग से क्रिमनल काम करते रहते हैं। सब से जास्ती क्रिमनल अंग कौन सा है। आंख। विकार की आश पूरी न हुई तो हाथ चलाने लग पड़ते। पहले2 है आंख। तब सुरदास की भी कहानी है। एक कहानी लिख दी है। समझ कुछ नहीं। सर्प को पकड़ चढ़ेगा कैसे। असम्भव है। शिव बाबा तो कोई शास्त्र पढ़ा हुआ नहीं है। यह रथ पढ़ा हुआ है। शिव बाबा को तो ज्ञान का सागर कहा जाता है। कहेंगे ज्ञानी तो सन्यासी हैं यह फिर उनको क्यों ज्ञान सागर कहते। यह तो तुम समझते हो शिव बाबा कोई थोड़े ही पुस्तक उठाया। बाप कहते हैं मैं कोई पुस्तक नहीं पढ़ता हूं। मैं तो नालेज-फुल हूं। बीज रूप हूं। यह सृष्टि रूपी झाड़ है। उनका रचयिता है बाप बीज। बाप समझाते हैं मैं बीज हूं। मेरा निवास स्थान मूलवतन में है। अभी मैं इस शरीर में विराजमान हूं। और कोई कह न सके कि मैं इस शरीर में विराजमान हूं। मैं इस मनुष्य सृष्टि का बीज रूप हूं। मैं परमपिता परमात्मा हूं। कोई कह न सकेंगे। सेन्सीबुल कोई अच्छा हो उनको कोई कहे ईश्वर सर्वव्यापी है। तो झट पूछेगा तुम भी ईश्वर हो? हां कहे तो झट जूता उतार उनको लगा दे। यह क्या तुम अल्ला साई हो। हो नहीं सकता। दो चार जूती मुंह में लगा दे। परन्तु इस समय ऐसा कोई सु सेन्सीबुल तो है नहीं। अल्ला का ही पता नहीं है। खुद ही कहते रहते अल्ला हूं। वह भी अंग्रेजी में कहते हैं ओमनी परजेन्ट। अर्थ समझे तो कब नहीं कहे। अभी तुम सर्वव्यापी कहेंगे? कह कर देखो। हम ईश्वर के रूप हैं, यह कहना तो बड़ी ग्लानी है। अथाह गाली देते हैं। पत्थर भितर में मिट्टी में मिला देते हैं। बच्चे अभी जानते हैं शिव बाबा की जयन्ती सो नई विश्व की जयन्ती। उसमें पवित्रता सुख शान्ति सभी आ जाती हैं। शिव जयन्ति सो कृष्ण जयन्ति। शिव जयन्ति सो दशहरा जयन्ति। शिव जयन्ति सो दीपमाला जयन्ति। शिव जयन्ति सो स्वर्ग जयन्ति। सभी जयन्तियां आ जाती हैं। शिव जयन्ति से सभी बड़े दिनों की जयन्तियां आ जाती हैं। यह सभी बातें बाप ही बैठ समझाते हैं। शिव जयन्ति सो शिवालय जयन्ति। वेश्यालय भरन्ति। जयन्ति बाद मस्ती भी होती है ना। शिव जयन्ति सो नई विश्व जयन्ति। चाहते हैं ना विश्व में शान्ति हो। तुम कितना अच्छी रीत समझाते हो परन्तु जैसे कि मूर्दे। जगते ही नहीं। अज्ञान नींद में सोये पड़े हैं। भक्ति को कहा जाता है अज्ञान। सीढ़ी नीचे उतरते जाते हैं। ज्ञान से होती है सदगति। भक्ति से होती है दुर्गति। बाप कहते हैं मैं आकर —

सर्व की सदगति करता हूं। सर्व माना सभी मनुष्य। तो स्वर्ग और नर्क का राज़ तुम बच्चों को बाप संगम पर ही बैठ समझाते हैं। अखबारें तो तुम्हारी ग्लानी करते हैं उन को लिख देना चाहिए निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सोय। तुम तो हमारे मित्र हो। बच्चे झट डर जाते हैं। यह तो साफ लिख देना चाहिए निन्दा हमारी जो करे.. तुम्हारी भी सदगति हम जरूर करेंगे। जितना चाहिए उतनी गाली दो। हमारे बाप ईश्वर की भी ग्लानी करते हो हमारी भी तो तो क्या हुआ। तुम्हारी सदगति हम जरूर करेंगे। न चाहेंगे तो भी नाक से पकड़ कर ले जावेंगे। डरने की तो बात ही नहीं। जो कुछ करते हैं कल्प पहले भी किया है। बाप सर्व की सदगति करेंगे। तुमने हमारे बाप को बहुत2 गाली दी है। तो भी बाप सभी की सदगति जरूर करेंगे। हम प्रजापिता ब्रह्माकुमारियां तुम जैसे कि भी सदगति जरूर करेंगे। फटकारना चाहिए अच्छी तरह से। अबलाओं पर अत्याचार तो कल्प पहले भी हुआ था। यह बच्चे भूल जाते हैं। बाप कहते हैं बेहद के बच्चे सभी हमारी ग्लानी करते हैं। सबसे प्यारे मित्र बच्चे ही लगते हैं। बच्चे तो फूल होते हैं। बच्चों को ही चुमन करते, माथा पर चढ़ाते हैं। कितनी उनकी सेवा करते हैं मां बाप। बाबा भी तुम बच्चों की सेवा करते थे ना। अभी तुमको यह नालेज मिलती है। जो तुम साथ ले जाते हो। जो यह नहीं लेते उनका ड्रामा में जो पार्ट है वही बजावेंगे। हिसाब किताब चुकुत कर घर चले जाते। स्वर्ग तो देख न सके। सभी थोड़े ही स्वर्ग देखेंगे। यह भी ड्रामा बना हुआ है। बाकी शान्ति जिसके लिए पुरुषार्थ करते हैं वह मिलेगी। बाप खूब करते रहते हैं। फिर आवेंगे भी देरी से। तमोप्रधान बहुत ही देरी से आवेंगे। यह राज़ भी बड़ा अच्छा समझने का है। अच्छे2 महारथी बच्चों पर भी ब्रह्मचारी बैठती है तो झट गुस्सा आ जाता। फिर चिट्ठी भी नहीं लिखते। बाबा भी कहते हैं इसकी मुरली बन्द कर दो। ऐसे को बाप का खजाना देने का क्या फायदा। फिर कोई की आंख खुली तो कहेंगे भूल हो गई। कोई तो प्रवाह ही नहीं करते। इतनी गफ्लत थोड़े ही करनी चाहिए। ऐसे बहुत ढेर हैं। बाप को याद ही नहीं करते। कोई को भी आप समान नहीं बनाते। नहीं तो चिट्ठी लिखने में देरी थोड़े ही लगती है। दो अक्षर ही पोस्टकार्ड में लिख दो बाबा हम ओ के हैं। आप को बहुत याद करते हैं। बस। कहते हैं फर्सत नहीं लिखने को। अभी यह दो अक्षर लिखने में क्या देरी लगेगी। खाने की फर्सत नहीं। बाबा को तो लिखना चाहिए ना बाबा हम हरदम आप को याद करते हैं। बाबा कोई अन्तर्यामी नहीं है। चिट्ठी लिखेंगे तब समझेंगे बच्चे याद करते हैं। बाकी फर्सत नहीं हो, यह तो हो नहीं सकता। पानी पीने की फर्सत है। दो अक्षर लिखने में तो पानी भी मैं टाईम लगता है। सिर्फ लिख दो आई एक ओ के। बस। ओ के माना ही बाप की याद में हो। याद से ही याद मिलती है। कई तो फिर ऐसे भी हैं जो सभी का नाम लिख देते हैं। फलाने2 की याद प्यार। मित्र सम्बन्धी आद हैं ना। तो सभी का नाम ठोक देते हैं। मैं समझ जाता हूं यह अपने दिल से ही लिख देते हैं। टेवपड़ी हुई है। बाबा जानते हैं उसने कब नहीं कहा होगा। या तो कह दिया होगा जब पत्र लिखो तो हमारी याद प्यार लिख देना। यह सच्ची याद थोड़े ही ठहरा। याद में तो सच्चाई चाहिए। झूठ चल न सके। अन्दर दिल खाती रहेगी। बच्चों को पायन्टस तो बहुत अच्छे ही समझाते रहते हैं। दिन प्रति दिन बाबा गुह्य2 बातें सुनाते रहते हैं। सोच करो कितने दुःख के पहाड़ गिरने वाले हैं। सतयुग में दुःख की बात ही नहीं। अभी है रावण राज्य। रावण को भी मानते नहीं। मैसुर का महाराजा भी रावण आद बनाकर दशहरा मनाते हैं। कितनी जंगली काम करते हैं। राम की सीता चोरी हुई। यह तो बहुत ग्लानी कर दी। राम को भगवान कहते हैं वह तो सर्वशक्तिवान ठहरा। फिर उनकी चोरी कैसे हो सकती है। बाप कहते हैं यह भी है अन्धश्रधा। बन्दर मिसल है ना। बन्दर सभी से गन्दे होते हैं। पैदा ही विकार से होते हैं। सतयुग में यह 5 विकार होते ही नहीं। अगर वहां भी होते तो वहां विषस वर्ल्ड कहना पड़े। यह तो समझ की बात है ना। इसमें तो डरने की कोई बात ही नहीं। आदी सनातन देवी-देवताधर्म किसने स्थापन की। याद भी नहीं है। सबसे बड़ा झूठ है सर्वव्यापी। तब बाप कहते हैं यदा.. मैं आकर सच्च खण्ड स्थापन करता हूं। सच्च खण्ड सतयुग को झूठ खण्ड कलियुग को कहा जाता है। ईश्वरसर्वव्यापी फर्स्ट झूठ। फिर कृष्ण की ग्लानी सेकण्ड। यह भी लिखो। इसीलिए कहा जाता है झूठ खण्ड। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग।